Deg I

अशोक का साम्राज्य-विस्तार

(Extent of Ashoka's Empire)

कलिंग युद्ध के बाद दिग्विजय के स्थान पर अशोक ने धम्म-विजय की नीति अपनायी। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं था कि चन्द्रगुप्त और बिन्दुसार द्वारा अर्जित एवं संगठित राज्य को उसने विघटित होने की छूट दे दी थी। विघटनकारी तत्वों को दबाने के लिए उसका बल अक्षुण्ण बना रहा। केवल इतर स्वतंत्र राज्यों को विजित करने के लिए बल या सेना का उपयोग कलिंग युद्ध के बाद नहीं किया गया। यही कारण है कि अशोक के समय में मौर्य-साम्राज्य की सीमायें हिंदुकुश और हिमालय से लेकर पश्चिम में सौराष्ट्र और पूरब में कलिंग तक तथा दक्षिण में चेर-चोल, पाण्ड्य आदि राज्यों की सीमा तक विस्तृत रहा।

अशोक को अपने पूर्वजों से एक विस्तृत साम्राज्य मिला था। देहरादून जिले में कालसी नामक स्थान से प्राप्त अशोक के शिलालेख से पता चलता है कि गढ़वाल देहरादून का यह पहाड़ी प्रदेश अशोक के अधिकार में था। अशोक द्वारा निर्मित स्मारकों से ज्ञात होता है कि नेपाल और उसकी तराई भू-भाग पर भी अशोक का आधिपत्य था। बिहार के चम्पारण में लौरिया अरेराज और लौरिया नन्दनगढ़ में भी अशोक के स्तम्भ लेख मिले हैं। यह स्तम्भलेख प्रत्यक्ष प्रमाण है कि नेपाल की तराई का समस्त भू-भाग अशोक के राज्य में शामिल था। नेपाली अनुश्रुतियों के अनुसार अशोक ने नेपाल के अनेक स्थानों की यात्रा की और वहाँ देवपाटन

था पाटल नामक नगर भी बसाया था। अशोक की साम्र
पुत्री चारुमती का विवाह नेपाल के क्षत्रिय राजकुमार
देवपाल से हुआ था। पश्चिमी नेपाल का प्रसिद्ध
स्वयंभूनाथ का मन्दिर भी अशोक द्वारा निर्मित
बतलाया जाता है।
पूरब में बंगाल अशोक के राज्य में शामिल था। इसकी
पुष्टि यूनानी लेखकों बौद्ध ग्रन्थ, दिव्यावदान और
ह्वेनसांग के विवरण से होता है। ~~यूनानी लेखकों के~~